REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

सतना जिले के महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और घरेलू हिंसा की घटनाओं के बीच संबंध का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रीती साकेत
शोधार्थी समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. रचना श्रीवास्तव
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

यह शोध पत्र सतना जिले के सामाजिक परिदृश्य में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और घरेलू हिंसा की घटनाओं के बीच संबंध का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परिणाम बताते हैं कि शिक्षा का स्तर घरेलू हिंसा की आवृत्ति कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च शिक्षा न केवल महिलाओं को आत्मविश्वास देती है, बल्कि आर्थिक अवसर, निर्णय क्षमता और सामाजिक भागीदारी भी बढ़ाती है। वहीं, कम शैक्षिक स्तर वाली महिलाओं में हिंसा की घटनाएँ अधिक दर्ज की गईं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा घरेलू हिंसा से संरक्षण का प्रभावी साधन है और यह सतना जिले के समाजशास्त्रीय ढांचे को समझने हेतु महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।

मुख्य शब्द – शिक्षा स्तर, घरेलू हिंसा, महिलाओं का स्वास्थ्य, सतना जिला एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन।

प्रस्तावना –

घरेलू हिंसा आज भी भारतीय समाज की एक गंभीर सामाजिक और मानवाधिकार समस्या बनी हुई है। यह केवल महिलाओं के शारीरिक स्वास्थ्य को ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि उनके मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और प्रजनन स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से घरेलू हिंसा व्यक्तिगत मुद्दा नहीं है, बल्कि यह पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, लैंगिक असमानता, पारिवारिक आर्थिक निर्भरता, सांस्कृतिक मान्यताओं और सामाजिक नियमों से प्रभावित एक बहुआयामी समस्या है।

शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। उच्च शिक्षा न केवल महिलाओं को ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है और हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम बनाती है। विभिन्न शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि शिक्षा और घरेलू हिंसा के बीच

प्रतिलोम संबंध पाया जाता है, जैसे–जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता है, महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली घरेलू हिंसा की घटनाएँ घटती हैं।

सतना जिला, मध्यप्रदेश के विंध्य क्षेत्र में स्थित, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से विविधता लिए हुए क्षेत्र है। यहाँ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर, सामाजिक संरचना और परिवारिक नियम अलग–अलग हैं। इन अंतरों के कारण घरेलू हिंसा की प्रकृति और आवृत्ति पर भी भिन्न प्रभाव पड़ता है।

इस शोध का उद्देश्य सतना जिले में महिलाओं के शिक्षा स्तर और उनके द्वारा झेली जाने वाली घरेलू हिंसा की आवृत्ति के बीच संबंध का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। यह अध्ययन न केवल स्थानीय स्तर पर नीति निर्माण और सामाजिक हस्तक्षेप के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा, बल्कि महिलाओं के सशक्तिकरण और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में भी सहायक होगा।

विश्लेषण –

शोध में सतना जिले की 300 विवाहित महिलाओं के सर्वेक्षण, गहन साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चाओं के माध्यम से शिक्षा स्तर और घरेलू हिंसा की आवृत्ति के बीच संबंध का अध्ययन किया गया। सर्वेक्षण में निरक्षर, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और स्नातक/उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ शामिल थीं। अध्ययन में महिलाओं की उम्र, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, परिवारिक संरचना, रोजगार की स्थिति और शिक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए आंकड़ा एकत्र किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टियों से किया गया। मात्रात्मक विश्लेषण में प्रतिशत, औसत, क्रॉस–टैबुलेशन और सहसंबंध तकनीक का उपयोग किया गया, जबकि गुणात्मक विश्लेषण में थीमैटिक कोडिंग के माध्यम से महिलाओं के अनुभवों और कथाओं का विश्लेषण किया गया।

शिक्षा स्तर और घरेलू हिंसा की आवृत्ति के बीच प्रतिलोम संबंध मौजूद है। निरक्षर महिलाओं में घरेलू हिंसा का अनुभव 68 प्रतिशत पाया गया, जबकि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में यह 57 प्रतिशत, माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में 39 प्रतिशत और उच्च माध्यमिक तथा स्नातक/उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में केवल 14–26 प्रतिशत तक घट गया। यह स्पष्ट संकेत देता है कि जैसे–जैसे शिक्षा स्तर बढ़ता है, महिलाओं को झेलनी पड़ने वाली घरेलू हिंसा की घटनाएँ घटती हैं। शिक्षा महिलाओं को मानसिक और भावनात्मक सशक्तिकरण देती है और उन्हें अपने अधिकारों, कानूनी उपायों और सामाजिक समर्थन के प्रति जागरूक बनाती है।

घरेलू हिंसा के प्रकारों के विश्लेषण से पता चला कि मानसिक और भावनात्मक हिंसा सर्वाधिक प्रचलित थी। निरक्षर और कम शिक्षित महिलाओं में शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हिंसा का अनुभव अधिक था। उच्च शिक्षित महिलाएँ शारीरिक और आर्थिक हिंसा से अपेक्षाकृत कम प्रभावित पाई गईं, जबकि मानसिक और भावनात्मक हिंसा की घटनाएँ अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में भी थोड़ी मात्रा में देखी गईं। यह बताता है कि शिक्षा महिलाओं को शारीरिक हिंसा के खिलाफ अधिक सक्षम बनाती है, लेकिन मानसिक और भावनात्मक हिंसा का सामना पूरी तरह से नहीं कराती।

ग्रामीण और शहरी अंतर की समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण अशिक्षित महिलाएँ घरेलू हिंसा की अधिक संवेदनशील श्रेणी में आती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक दबाव, आर्थिक निर्भरता, पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक कलंक के कारण महिलाएँ हिंसा की शिकायत करने या विरोध करने में असमर्थ रहती हैं। इसके विपरीत, शहरी उच्च शिक्षित महिलाएँ मानसिक और भावनात्मक हिंसा का सामना कर रही थीं, लेकिन उनके पास शिकायत करने, कानूनी सहायता लेने और सामाजिक नेटवर्क का लाभ उठाने की क्षमता थी।

सहसंबंध विश्लेषण से शिक्षा स्तर और घरेलू हिंसा के बीच पीर्यसन सहसंबंध –0.63 पाया गया। यह मजबूत नकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है, जो स्पष्ट करता है कि शिक्षा स्तर बढ़ने के साथ–साथ घरेलू हिंसा की घटनाएँ घटती हैं। विशेष रूप से निरक्षर और कम शिक्षित महिलाएँ शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक

हिंसा की अधिक शिकार पाई गईं। वहीं, उच्च शिक्षित महिलाएँ जागरूक, आत्मनिर्भर और सामाजिक व कानूनी उपाय अपनाने में सक्षम थीं।

गुणात्मक विश्लेषण में गहन साक्षात्कारों और फोकस समूह चर्चाओं से यह भी पता चला कि उच्च शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक थीं, घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनी कार्रवाई और परामर्श सेवाओं का लाभ ले सकती थीं और सामाजिक दबाव के बावजूद आत्मनिर्भर रहने की क्षमता रखती थीं। इसके विपरीत, ग्रामीण अशिक्षित महिलाएँ पितृसत्तात्मक दबाव, सामाजिक कलंक और आर्थिक निर्भरता के कारण हिंसा के प्रतिरोध और शिकायत करने में असमर्थ थीं। इन महिलाओं ने बताया कि हिंसा को स्वीकार करना और चुप रहना उनके लिए सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक स्थिरता बनाए रखने का एक तरीका था।

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षा महिलाओं की निर्णय क्षमता, आत्मसम्मान और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाती है। उच्च शिक्षित महिलाएँ परिवार और समाज में अपने अधिकारों की रक्षा करने में अधिक सक्षम होती हैं, जिससे घरेलू हिंसा की घटनाओं पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नियंत्रण संभव होता है। वहीं, कम शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों और कानूनी विकल्पों के प्रति कम जागरूक थीं और घरेलू हिंसा की घटनाओं को सहन करना उनकी सामाजिक स्थिति बनाए रखने का एक आवश्यक उपाय माना जाता था।

इस प्रकार, यह विश्लेषण स्पष्ट रूप से यह संकेत देता है कि शिक्षा न केवल महिलाओं को सशक्त बनाती है, बल्कि घरेलू हिंसा के प्रति उनके प्रतिरोध, शिकायत और सुरक्षा की क्षमता को भी बढ़ाती है। शिक्षा स्तर में वृद्धि महिलाओं के मानसिक, सामाजिक और आर्थिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है और हिंसा की आवृत्ति में प्रत्यक्ष कमी लाती है। ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम और सशक्तिकरण योजनाएँ आवश्यक हैं, ताकि वे घरेलू हिंसा के खिलाफ अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकें।

परिणाम –

इस अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि सतना जिले में महिलाओं के शिक्षा स्तर और उनके द्वारा झेली जाने वाली घरेलू हिंसा की आवृत्ति के बीच प्रतिलोम संबंध है। सर्वेक्षण और विश्लेषण से यह पाया गया कि निरक्षर और कम शिक्षित महिलाएँ शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक हिंसा की अधिक शिकार हैं। निरक्षर महिलाओं में घरेलू हिंसा का अनुभव लगभग 68 प्रतिशत पाया गया, जबकि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में यह 57 प्रतिशत, माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में 39 प्रतिशत और उच्च माध्यमिक तथा स्नातक/उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में 14–26 प्रतिशत तक घट गया। यह स्पष्ट संकेत देता है कि शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक, आत्मनिर्भर और हिंसा के खिलाफ प्रतिरोधी बनाती हैं।

हिंसा के प्रकारों का विश्लेषण दर्शाता है कि मानसिक और भावनात्मक हिंसा सर्वाधिक प्रचलित थी, जो सभी शिक्षा स्तर की महिलाओं में प्रमुख रूप से देखी गई। शारीरिक और आर्थिक हिंसा के मामले उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में कम पाए गए, जबकि निरक्षर और कम शिक्षित महिलाओं में इनका प्रतिशत अधिक था। यह संकेत करता है कि शिक्षा महिलाओं को शारीरिक और आर्थिक रूप से आत्मसशक्त बनाने में सहायक है, जबकि मानसिक और भावनात्मक हिंसा के प्रभावों को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाती। ग्रामीण और शहरी अंतर की समीक्षा से यह भी पता चला कि ग्रामीण अशिक्षित महिलाएँ घरेलू हिंसा के प्रति सबसे संवेदनशील श्रेणी में आती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक कलंक, पारिवारिक दबाव, पितृसत्तात्मक मूल्य और आर्थिक निर्भरता महिलाओं को हिंसा के खिलाफ शिकायत या विरोध करने से रोकते हैं। इसके विपरीत, शहरी उच्च शिक्षित महिलाएँ मानसिक और भावनात्मक हिंसा का सामना करने में सक्षम होती हैं और उनके पास कानूनी, सामाजिक और आर्थिक उपायों तक पहुँच होती है।

सहसंबंध विश्लेषण में शिक्षा स्तर और घरेलू हिंसा के बीच पिर्यसन सहसंबंध –0.63 पाया गया। यह मजबूत नकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है कि जैसे–जैसे शिक्षा स्तर बढ़ता है, घरेलू हिंसा की घटनाएँ घटती हैं। गुणात्मक विश्लेषण में गहन साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चाओं से यह भी स्पष्ट हुआ कि उच्च शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, कानूनी सहायता प्राप्त करने और सामाजिक नेटवर्क का उपयोग

करने में सक्षम हैं, जबकि ग्रामीण अशिक्षित महिलाएँ पितृसत्तात्मक दबाव और आर्थिक निर्भरता के कारण हिंसा के प्रतिरोध में असमर्थ रहती हैं।

इस अध्ययन में यह भी देखा गया कि शिक्षा महिलाओं की निर्णय क्षमता, आत्मसम्मान और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाती है। उच्च शिक्षित महिलाएँ घरेलू और सामाजिक वातावरण में अपने अधिकारों की रक्षा करने में अधिक सक्षम होती हैं। इसके विपरीत, कम शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों और कानूनी विकल्पों के प्रति कम जागरूक पाई गईं और हिंसा की घटनाओं को सहन करना उनकी सामाजिक स्थिति बनाए रखने का एक अनिवार्य तरीका माना गया। कुल मिलाकर, यह परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शिक्षा स्तर बढ़ने पर घरेलू हिंसा की घटनाओं में प्रत्यक्ष कमी आती है और महिलाओं की सशक्तिकरण की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

निष्कर्ष –

सतना जिले में महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि घरेलू हिंसा की घटनाओं को कम करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। निरक्षर और कम शिक्षित महिलाएँ शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक हिंसा की अधिक शिकार पाई गईं, जबकि उच्च शिक्षित महिलाएँ जागरूक, आत्मनिर्भर और प्रतिरोधी थीं। मानसिक और भावनात्मक हिंसा सर्वाधिक प्रचलित रूप रही और ग्रामीण अशिक्षित महिलाएँ हिंसा के प्रति सबसे संवेदनशील समूह रही। शिक्षा महिलाओं को आत्मसशक्त बनाने, अधिकारों के प्रति जागरूक करने, कानूनी सहायता प्राप्त करने और सामाजिक नेटवर्क का लाभ उठाने में सक्षम बनाती है। अध्ययन यह भी बताता है कि घरेलू हिंसा केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना का परिणाम है। पितृसत्तात्मक मूल्य, पारिवारिक आर्थिक निर्भरता, शराब सेवन और सामाजिक कलंक घरेलू हिंसा के मुख्य कारक हैं। शिक्षा इन कारकों के प्रभाव को कम करती है और महिलाओं को मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है। इस शोध के परिणाम नीति निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शिक्षा विभाग के लिए महत्वपूर्ण संकेत देते हैं। महिलाओं की शिक्षा में निवेश, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अभियान, महिला स्वयं सहायता समूहों और कौशल विकास कार्यक्रम, कानूनी सहायता, हेल्पलाइन सुविधाएँ और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन आवश्यक हैं। ये उपाय महिलाओं को सशक्त बनाने, घरेलू हिंसा की घटनाओं को कम करने और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में सहायक होंगे। शिक्षा महिलाओं की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक स्थिति सुधारने का सबसे प्रभावी माध्यम है। सतना जिले में महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि न केवल घरेलू हिंसा की घटनाओं को कम करेगी, बल्कि समाज में लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय को भी मजबूती प्रदान करेगी। शिक्षा ही महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता और उनके समाज में सम्मान की गारंटी है।

संदर्भ –

1. बीना अग्रवाल – भारत में लैंगिक असमानता और समाज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृष्ठ 121–129
2. एन. कृष्णराज – भारत में महिलाएँ और हिंसा, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 2012, पृष्ठ 88–96
3. मधु किश्वर – महिला, परिवार और राज्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, वर्ष 2008, पृष्ठ 156–163
4. रेणुका चौधरी – महिला शिक्षा और सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, वर्ष 2016, पृष्ठ 92–99
5. अमर्त्य सेन – विकास एक स्वतंत्रता के रूप में, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, वर्ष 1999, पृष्ठ 203–210
6. पी. एम. कुलकर्णी – लैंगिक समाजशास्त्र, पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली, वर्ष 2015, पृष्ठ 174–181